DISSOCIATIVE DISORDER

मनोविच्छेदी या वियोजनात्मक विकृति :

मनोविच्छेदी विकृतियाँ या वियोजनात्मक प्रतिक्रियाएँ वे मानसिक विकृतियाँ हैं, जिसमें सम्बन्धित व्यक्ति या व्यक्तित्व अचेतन व दमित संवेगात्मक तनाव के प्रभाव के कारण विच्छिन्न अथवा विच्छेदित हो जाता है।

वियोजनात्मक विकृति या मनोविच्छेदी विकृतियों के पाँच प्रकार बताए गये हैं जो निम्नलिखित हैं-

(A) वियोजनात्मक स्मृति लोप - (Dissociative Amensia)
(B) वियोजनात्मक आत्म-विस्मृति - (Dissociative - Fugue)
(C) वियोजनात्मक पहचान विकृति - (Dissociative Identity Disorder DID)
(D) व्यक्तित्व लोप विकृति (Depersonalization Disorder)
(E) निद्रा भ्रमण (Sommnambulism)

(A) वियोजनात्मक स्मृति लोप -> वियोजनात्मक विकृति के इस प्रकार में सम्बन्धित व्यक्ति अन्य दृष्टिकोण से सामान्य रहता है केवल उसकी स्मृति लुप्त हो जाती है। स्मृति लोप आंशिक या पूर्ण दोनों हो सकता है। इसमें व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों का प्रत्याह्वान करने अथवा किसी परिचित व्यक्ति, वस्तु या स्थान को पहचानने में असमर्थ रहता है, वियोजनात्मक विकृति या स्मृति लोप शारीरिक स्मृति लोप से भिन्न रहता है, शारीरिक स्मृति लोप किसी शारीरिक रोग या मस्तिष्कीय चोट आदी से उत्पन्न होता है जबकि वियोजनात्मक स्मृति लोप बिना किसी शारीरिक आधारित आधार के होता है तथा इसमें रोगी पूर्व अनुभवों का प्रत्याह्वान (Recall) करने में असमर्थ रहता है लेकिन अर्जित अनुभव चेतन स्तर के नीचे सुरक्षित रहते हैं इसलिए अर्जित अनुभव चेतन स्तर के नीचे सुरक्षित रहते हैं इसलिए सम्मोहनावस्था में

रोगी इनका Recall कर सकता है। स्मृति लोप कई प्रकार का होता है, जिनमे से मुख्य है-

(I) पश्चगामी स्मृति लोप (Retrograte Amensia)
(II) उत्तर आघातीय स्मृति लोप (Post Traumatic Amensia)
(III) अग्रगामी स्मृति लोप (Anterograte Amensia)
(IV) चयनात्मक या श्रेणिवद्ध स्मृति लोप (Selective or Categorical Amensia)
(V) सामान्यीकृत स्मृति लोप (Generalized Amensia)
(VI) सतत् स्मृति लोप (Continous Amensia)
(VII) क्रमवद्ध स्मृति लोप (Systematized Amensia)

कारण → वियोजनात्मक स्मृति लोप का कारण मुख्यत: यह है कि यहाँ सम्बन्धित व्यक्ति अपने दमित दुश्चिन्ता अथवा अन्तर्द्वन्द के कटु अनुभव व पीडाजनक संवेग को पुन: जाग्रत नही करना चाहता और इसी कारण यह वियोजनात्मक स्मृति लोप को अचेतन स्तर पर आमंत्रित कर बैठता है।

(3) वियोजनात्मक आत्म विस्मृति → इस विकार मे स्मृति लोप के लक्षण तो पाये जाते है साथ ही एक खास लक्षण यह भी जुड जाता है कि इसमे व्यक्ति अपने घर-बार को छोडकर अन्यंत्र किसी जगह चला जाता है। यहाँ यह फ्यूगं कि स्थिति मे क्या नाम, क्या काम, शुरू कर देता है यहाँ तक कि पुनर्विवाह भी कर लेता है फ्यूग कि यह अवस्था कुछ घंटो से लेकर महीनो तक अथवा वर्षो तक चलती है। फ्यूंग कि अवधी समाप्त होने पर वह रोगी स्वंय को नयी जगह पाकर आश्चर्य चकित हो जाता है क्योंकि फ्यूंग के पहले कि बाते तो याद आती है, लेकिन फ्यूग की अवधी की सभी घटनाएँ विस्मृत हो जाती है।

लक्षण → फ्यूंग की स्थिति में प्रमुख लक्षणो मे स्मृति लोप ही होती है। स्मृति ह्रास को छोडकर व्यक्ति सामान्य सा दिखने लगता है, क्योकि वह सामान्य व्यवहार व शिष्टाचार दर्शाता है।

कारण → फ्यूग से सम्बन्धित अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि अक्सर फ्यूग की शुरूआत ऐसी घटना के बाद होती है जिसमें व्यक्ति को अत्यधिक मानसिक आघात पहुँचता है। जिन व्यक्तियों में अपरिपक्वता, आत्मकेन्द्रित तथा अति सुझाव ग्रहणशीलता पाई जाती है, जिसमें यह रोग अधिक विकसित होती है।

Ⓒ वियोजनात्मक पहचान विकृति → इससे पहले बहुव्यक्तित्व विकृति (Multiple Personality Disorder) कहते थे। वियोजनात्मक पहचान विकृति में एक ही व्यक्ति समय-समय पर दो या दो से अधिक भिन्न व्यक्तित्व का प्रदर्शन करता है। प्रत्येक व्यक्तित्व स्वंय में संवेगात्मक एवं भावात्मक दृष्टिकोण से काफी संगठित होता है। तथा प्रत्येक का संज्ञान व विचार अद्वितीय होता है। व्यक्तित्व का यह नाटकीय परिवर्तन कुछ मिनटों से लेकर वर्षों तक होता है। रोगी एक व्यक्तित्व अवस्था मे प्रसन्नचित, चिंतामुक्त, मजाकिया और सामाजिक हो सकता है तो दूसरी व्यक्तित्व अवस्था मे गम्भीर, अध्ययनशील, दुःखी शांत और एकांतप्रिय हो सकता है। कभी-कभी रोगी दो या अधिक तीन चार या उससे भी अधिक व्यक्तित्वों का भी प्रदर्शन करता है। इनमे सभी व्यक्तित्वो के बीच सम्बन्ध अपेक्षाकृत जटिल एवं उलझनपूर्ण होते हैं। एक प्रकार के व्यक्तित्व द्वारा रोगी जो कुछ भी करता है सामान्यत: उसकी जानकारी दूसरे व्यक्तित्व को नही पाती है।

कारण → DID की उत्पत्ति का सबसे प्रधान कारण बाल्यावस्था मे हुआ लैंगिक-दुर्व्यवहार (Sexual Abuse) से उत्पन्न तीव्र सांवेगिक आघात है जो आगे चलकर व्यक्ति को DID का शिकार बना देता है। इसी तरह आत्म-सम्मोहन के प्रति तीव्र उन्मुखता रखने वाले व्यक्ति भी इससे आसानी से पीड़ित हो जाते हैं

(D) व्यक्तित्व लोप विकृति -> व्यक्तित्व लोप विकृति मे व्यक्ति का आत्मन (Self) का प्रत्यक्षीकरण या अनुभव इस सीमा तक परिवर्तित हो जाता है कि उसमे पृथक्करण का भाव उत्पन हो जाता है, व्यक्ति स्वंम को एक यंत्रवत । चलने वाला प्राणी समझने लगता है उसे ऐसा महसूस होता है कि वह अपनी हि मानसिक एवं शारीरिक प्रक्रियाओ को बाहर से खड़ा होकर देख रहा है। परंतु फिर भी इसके वास्तविकता की परख का गुण होता है अर्थात यह अच्छी तरह समझता है कि इसे यंत्रवत चलने वाले प्राणी का मात्र अनुभव होता है न कि वह सचमुच मे वैसा प्राणी है।

(E) निद्रा भ्रमण -> इस शब्द का अर्थ निद्रा मे चलना है इस स्थित मे व्यक्ति निद्रा की अवस्था में चलता भी है, तथा निद्रा मे वह अपनी अचेतन इच्छाओ कि पूर्ति भी करता है। इस अवस्था मे वह अनेक कार्य करता है, जिसकी चिंता इसे नही रहती है। परंतु अचेतन मन क्रियाशील रहता है निंद से उठने पर इसे निद्रावस्था मे किये गये कार्यो का स्मरण नही रहता है।

लक्षण -> इस विकृति का मुख्य कारण निंद मे भ्रमण करना है, रोगी सोने के लिए जाता है पर रात में किसी भी समय उठकर वह एक कमरे से दूसरे कमरे, या घर से बाहर चला जाता है। अत: इस अवस्था में न केवल सरल क्रियाएं बल्कि जटिल क्रियाए भी करता है।

कारण -> अन्य दूसरी मनोविच्छेदी प्रतिक्रियाओ कि तरह निद्रा भ्रमण का कारण भी संबन्धित व्यक्तियो द्वारा अपनी दमित प्रबल इच्छा की ही अचेतन संतुष्टि करना है। कॉमरॉन के अनुसार- कभी-कभी निद्रा भ्रमण का कारण बाल्यावस्था के दमित संघर्ष व दुखद समस्याओ/घटनाओ की पुनरावृति भी देखने मे आती है।

वियोजनात्मक या मनोविच्छेदी प्रतिक्रियाओं की हेतुकी →

वैसे वियोजनात्मक विकृति के प्रत्येक प्रकार की अपनी विशिष्ट हेतुकी है. अतः यह इसके कारकों का उल्लेख वांछनीय है जिनकी इस विकृति की उत्पत्ति में विशिष्ट योगदान है —

(I) सशक्त तथा संकुचित अहं को विकसित करने में असफलता
(II) समस्या समाधान का शैशवकालीन ढंग
(III) बाल्यवस्था की अत्यधिक कल्पना तरंग
(IV) आदिम अहं संरचना तथा पुरातन परांहं का पुनरुत्प्रेरक
(V) अचेतन तथा अवचेतन के मध्य निश्चित सीमा का अभाव
(VI) तीव्र दीर्घकालिन प्रतिबल

उपचार → वियोजनात्मक प्रतिक्रियाओं का उपचार वस्तुतः मनश्चिकित्सा विधियों विशेषकर मनोविश्लेषण विधि द्वारा ही संभव है। इसके अंतर्गत रोगी को यह बताया व समझाया जाता है कि इसका आधार कोई दैहिक विकृति नहीं है। रोगी को मनोवैज्ञानिक उपचार के द्वारा जीवन की कठोर वास्तविकता का धैर्यपूर्ण सामना करने के लिए मानसिक रूप से तत्पर तथा प्रोत्साहित व मजबूत किया जाता है. इसके सम्मोहन, सुझाव, पुनःशिक्षण, संज्ञानात्मक चिकित्सा आदी का भी संयोजित उपयोग किया जाता है।